ग्रामीण समाजशास्त्र

–डॉ0 शिप्रा त्रिपाठी
असिस्टेंट प्रोफेसर– समाजशास्त्र
छांगुर सिंह महाविद्यालय, उमरी, बेगमगंज, गोण्डा

समाजशास्त्र एक आधुनिक सामाजिक विज्ञान है। समाजशास्त्र समाज का विज्ञान है तथा समाज सामाजिक सम्बन्धों की व्यवस्था है। अगस्त कॉम्ट ने समाजशास्त्र शब्द का प्रयोग सबसे पहले सन् 1838 में फ्रांस में किया था। इस विषय के विकास के साथ–साथ इसका विशेषीकरण भी हुआ और जिसके परिणाम स्वरूप अनेक विशिष्ट शाखाओं का विकास हुआ। ग्रामीण समाजशास्त्र भी जिनमें से एक है। 'ग्रामीण समाजशास्त्र" समाजशास्त्र की वह शाखा है जिसमें ग्रामीण समाज, ग्रामीण सामाजिक सम्बन्धों तथा ग्रामीण सामाजिक संस्थाओं का अध्ययन किया जाता है।1

सामाजिक पारिस्थिति के आघार पर सम्पूर्ण सामाजिक जीवन को दो प्रमुख समुदायों में बाँटा जा सकता है–– गाँव तथा नगर। ग्रामीण समुदाय का सूक्ष्म तथा व्यवस्थित अध्ययन करने वाली समाजशास्त्रीय शाखा का नाम ही ग्रामीण समाजशास्त्र है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि ग्रामीण पर्यावरण अथवा परिस्थितियों से प्रभावित सामाजिक ढाँचे, सामाजिक सम्बन्धों, समूह की विशेषताओं तथा नियन्त्रण की व्यवस्था का अध्ययन ही ग्रामीण समाजशास्त्र की विषयवस्तु है। समाजशास्त्र की इस शाखा का विकास यूरोप में औद्योगिक क्रान्ति के कारण ग्रामीण जीवन में उत्पन्न होने वाली समस्याओं के फलस्वरूप हुआ। इस समय से महसूस किया जाने लगा कि यदि ग्रामीण जीवन को नियोजित तथा पृथक रूप से अध्ययन नहीं किया गया तो सामाजिक ढाँचे में एक बड़ा असन्तुलन उत्पन्न हो जायेगा। इससे सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक तथा राजनैतिक विघटन की भी सम्भावना उत्पन्न हो सकती है।

ग्रामीण समाजशास्त्र, समाजशास्त्र की एक महत्त्वपूर्ण शाखा है क्योंकि विश्व की अधिकांश जनसंख्या गाँवों में निवास करती है तथा इसे समझने और विश्लेषण करने में ग्रामीण समाजशास्त्र हमें सहायता देता है। आज अधिकांश विद्वान ग्रामीण समाजशास्त्र को समाजशास्त्र की एक प्रमुख शाखा मानते हैं। जैसा कि इसके नाम से ही स्पष्ट है, कि ग्रामीण समाजशास्त्र ग्रामीण समाज का अध्ययन या विज्ञान है। ग्रामीण समाजशास्त्र, ग्रामीण पर्यावरणसे जुड़े हुए अनेक मामलों, समस्याओं, तथ्यों व सामाजिक सम्बन्धों का विस्तृत आध्ययन करता है। एक विज्ञान के रूप में ग्रामीण समाजशास्त्र गाँव के विभिन्न संगठनों, संस्थाओं, प्रक्रियाओं, आर्थिक, सामाजिक ढाँचे का अध्ययन करना है जो गाँव के विकास कार्यक्रम व गाँव की उन्नति के लिए महत्त्वपूर्ण भूमिका निमाता है। ग्रामीण समाजशास्त्र के प्रमुख रूप से जो अध्ययन हुए हैं उनका विश्लेषण करने से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण समाजशास्त्र में निम्नलिखित बातों का विशेष रूप से अध्ययन किया गया है अर्थात ग्रामीण समाजशास्त्र की विषय–वस्तु निम्न प्रकार है–

1.1.1 ग्रामीण सामाजिक संरचना

सामाजिक सम्बन्धों की क्रमबद्ध व्यवस्था को सामाजिक संरचना कहा जाता है। ग्रामीण समाजशास्त्र में अधिकतर अध्ययन ग्रामीण सामाजिक संरचना के बारे मेंहुए हैं। ग्रामीण जीवन का पूर्ण ज्ञान केवल सामाजिक संरचना के अध्ययन से ही हो सकता है। ग्रामीण जीवन अनेक तरह के स्थानापन्न प्रस्तुत करता है। इसलिए इन स्थानापन्न के प्रतिमानों का संसार के विभिन्न क्षेत्रों में अध्ययन करना जरूरी है। ग्रामीण सामाजिक संरचना का विधिवत ज्ञान केवल ग्रामीण जीवन को समझने में ही सहायक नहीं है, अपितु अनेक समस्याओं के समाधान में भी मार्गदर्शक का कार्यकर सकता है।

1.1.2 ग्रामीण सामाजिक संगठन

ग्रामीण सामाजिक संगठन दूसरा महत्त्वपूर्ण तत्त्व है जिसका अध्ययन ग्रामीण समाजशास्त्र में किया जाता है। ग्रामीण सामाजिक संगठन में परिवार तथा विवाहका अध्ययन महत्त्वपूर्ण है। आधुनिक युग में औद्योगीकरण, नगरीकरण, पश्चिमीकरण तथा शिक्षा इत्यादि से पारिवारिक संगठनों और वैवाहिक मान्यत्ताओं कण अध्यन तथा इनमें होने वाले परिवर्तनों का अध्ययन ग्रामीण समाजशास्त्र मैं विशेष महत्त्व रखता है। ग्रामीण सामाजिक संगठन का ज्ञान प्राप्त करना इसलिए जरूरी है क्योंकि इससे ग्रामीण विधटन रोकने के लिए उठाये जाने वाले कदमों का ज्ञान प्राप्त हो सकता है।

1.2.3 ग्रामीण जीवन की विशेषताएँ

ग्रामीण समाजशास्त्र की विषय–वस्तु में ग्रामीण जीवन का अध्ययन करना एक विशिष्ट स्थान रखता है। वास्तव में यह उसकी मूल आवश्यकता है। ग्रामीण जीवन की विशेषताओं का अध्ययन करना तथा इन्हें नगरीय विशेषताओं की तुलना में समझना ग्रामीण समाजशास्त्र का ही क्षेत्र है। यद्यपि ग्रामीण तथा नगरीय विशेषत्ताएँ आपस में इस तरह से जुड़ी हुई हैं कि इन्हें एक–दूसरे से अलग करनाएक कठिन कार्य है, फिर भी अधिकतर समाजशास्त्री इस बात से सहमत हैं कि ग्रामीण जीवन नगरीय जीवन से बिलकुल पृथक है। इन दोनों में अन्तर करना ग्रामीण समाजशास्त्र का सर्वप्रथम उददेश्य है।

1.2.4 ग्रामीण सामाजिक स्तरीकरण

ग्रामीण सामाजिक स्तरीकरण पर भारतीय समाज में सबसे अधिक अध्ययनहुए हैं अर्थात ग्रामीण समुदायों के बारे में जितने अध्ययन हुए हैं उनमें सामाजिकस्तरीकरण के अध्ययनों का प्रमुख स्थान रहा है। अन्तर्जातीय सम्बन्धों का अध्ययन अथवा जातियों के प्रकार्यात्मक सम्बन्धों की व्यवस्था (जजमानी व्यवस्था) वर्ग संरचना, जाति तथा वर्ग में सम्बन्ध, स्थानीय स्वतन्त्र सरकार में जाति–संरचना काप्रभाव, प्रभु जाति की भूमिका इत्यादि से सम्बन्धित कुछ ऐसे प्रमुख अध्ययन हैं जिन्हें हम इस श्रेणी में रख सकते हैं। सामाजिक स्तरीकरण का ग्रामीण समाजशास्त्र विषय–वस्तु में विशेष महत्त्व है।

1.2.5. ग्रामीण आर्थिक समस्यायों का अध्ययन

वास्तव में ग्रामीण समाजशास्त्र का विकास ही समस्याओं के अध्ययन से हुआ है। गाँव को एक आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक इकाई मानकर इसमें प्राथी जाने वाली प्रमुख समस्याओं (पैसे कृषि समस्या, बेरोजगारी की समस्या,निर्धनता, ऋण ग्रस्तता, अस्पृश्यता, जातिवाद तथा मद्यपान इत्यादि) के अध्ययन किये गये हैं। ग्रामीण सामाजिक समस्याओं के अध्ययन ग्रामीण समाजशास्त्र की विषय–वस्तुका ही एक अंग है।

1.2.6. ग्रामीण सामाजिक संस्थाएँ

ग्रामीण सामाजिक संस्थाएँ भी ग्रामीण समाजशास्त्र की विषय–वस्तु हैं।अनेक तरह की सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक तथा आर्थिक संस्थाओं, जो कि ग्रामीण समाज में पायी जाती हैं, का अध्ययन किया जाता है। सामाजिक संस्था नियमों की व्यवस्था तथा कार्यप्रणाली को कहा जाता है। ग्रामीण सामाजिक संस्थाओं में ग्रामीण कार्य, हार, शिक्षा मनोरंजन आदि का विशेष महत्त्व रहा है।

1.2.7. ग्रामीण सामाजिक जीवन

ग्रामीण सामाजिक जीवन के अन्तर्गत सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक, धार्मिक,सांस्कृतिक, दार्शनिक, भौतिक तथा अभौतिक पहलुओं का अध्ययन किया जात्ता है जिनका कि ग्रामवासियों से सम्बन्ध है।

1.2.8. ग्रामीण पुनर्निर्माण

ग्रामीण समाजशास्त्रियों द्वारा अर्जित ज्ञान व्यावहारिक समस्याओं के समाधानतथा ग्रामीण पुनर्निम्रण में भी सहायक हो सकता है। ग्रामीण समाज के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन, समस्याओं तथा उनके कारकों का अध्ययन ग्रामीण पुनर्निर्माण कार्यक्रमों में सहायता दे सकता है। उपयोगितावादी

समाजशास्त्रियों के अनुसार तो ग्रामीण समाजशास्त्र एक ऐसा विज्ञान है जिसमें ग्रामीण पुनर्निर्माण का ही अध्ययन किया जाता है।

1.2.9. ग्रामीण परिवर्तन

समय के साथ–साथ ग्रामीण समुदाय भी बड़ी तेजी से बदलते जा रहे हैं। औद्योगीकरण, पश्चिमीकरण, संस्कृत्तीकरण, आधुनिकीकरण तथा शिक्षा इत्यादि से गाँव के प्रमुख स्तम्भ–जाति एवं वर्ग, परिवार तथा विवाह इत्यादि–पूरी तरह से प्रभावित हुए हैं। इसलिए इन प्रक्रियाओं का ग्रामीण क्षेत्रों में अध्ययन तथा इनके ग्रामीण सामाजिक संरचना पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना ग्रामीणसमाजशास्त्र का ही विषय–वस्तु है।

1.2.10. ग्रामीण सामाजिक नियोजन

आज के इस वैज्ञानिक युग में सामाजिक नियोजन अर्थात् नियोजित सामाजिक परिवर्तन में रुचि बढ़ती जा रही है। इसका अर्थ है प्रत्येक समाज केसामने जो लक्ष्य आज हैं, जिनकी ओर वह आगे बढ़ने का प्रयास कर रहा है, इन्हें अवांछनीय परिवर्तनों पर रोक लगाकर तथा वांछनीय परिवर्तन लाकर ही प्राप्त किया जा सकता है। नियोजन के लिए सामाजिक संरचना का ज्ञान होना जरूरीहै। ग्रामीण पुनर्निर्माण के लिए जो नियोजित प्रयास, जैसे पंचायती राज, सामुदायिक विकास कार्यक्रम, राष्ट्रीय प्रसार सेवा, एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम इत्यादि हुए हैं, उनका मूल्यांकन करना, इन्हें प्रभावशाली बनाने के लिए सुझाव देना तथाइनकी कमियों को बताना ग्रामीण समाजशास्त्र की ही विषय–वस्तु है।उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि ग्रामीण समाजशास्त्र की निश्चित विषय–क्षेत्र एवं विषय–वस्तु है जिसके अध्ययन द्वारा ग्रामीण समाजशास्त्री समाजके प्रति अपने उत्तरदायित्व को निभा रहे हैं।इसके अतिरिक्त, ग्रामीण समाजशास्त्र का अध्ययन निम्नलिखित कारणों से अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाता है द्य4

(1) ग्रामीण समाजशास्त्र ग्रामीण पुनर्निर्माण में सहायक है। इससे ग्रामीण समस्याओं के बारे में विधिवत ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है तथा उनके समाधानके उपायों के बारे में सोचा जा सकता है।

(2) भारत गाँवों का देश है। भारत की कुल जनसंख्या का दो–तिहाई से अधिक भाग गाँवों में रहता है तथा ग्रामीण समाजशास्त्र ग्रामीण व्यक्तियों को समझने में सहायता प्रदान करता है।

(3) भारतीय गाँव संस्कृति का मूल स्रोत है। इसलिए अगर भारतीय संस्कृति को समझना है तो भी गाँव का अध्ययन करना जरूरी है।

(4) गाँव अध्ययन की मूल इकाई है। आज एक ओर नियोजित सामाजिक परिवर्तन की महत्ता बढ़ती जा रही है तो दूसरी ओर गाँव में रूढ़िवादिता तथा अच्धविश्वास के कारण कई सामुदायिक विकास कार्यक्रम असफल होते जा रहे हैं।ग्रामीण समाजशास्त्री ग्रामीण समाज में नियोजित परिवर्तन लाने में सहायता देसकते हैं।

(5) भारत में ग्रामवासियों का प्रमुख व्यवसाय कृषि तथा इससे सम्बन्धित अन्य कार्य हैं। कृषकों की समस्याएँ कम होने के बजाय निरन्तर बढ़ती जा रही हैं।उनमें पाया जाने वाला असन्तोष उन्हें आन्दोलन करने पर विवश कर रहा है। वे कृषि द्वारा अपना जीवन–यापन करने में अनेक प्रकार की कठिनाइयों का सामनाकर रहे हैं। इसलिए ग्रामीण समाजशास्त्री कृषकों की समस्याओं को समझने मेंमहत्त्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

(6) भारतीय समाजशास्त्र वास्तव में ग्रामीण समाजशास्त्र ही है। अधिकांश जनसंख्या गाँवों में रहने के कारण अधिकांश अध्ययन गाँव के बारे में ही हुए हैं।स्वतन्त्रता–प्राप्ति के पश्चात् यद्यपि गाँवों के विकास में विशेष प्रगति हुई है, फिर भी पुनर्निर्माण का उद्देश्य पूर्ण रूप से सफल नहीं हो पाया है। ग्रामीण समाजशास्त्रीसरकार को विभिन्न ग्रामीण कार्यक्रमों में विशेष–सलाह दे सकते हैं।

(7) भारतीय ग्रामीण समाज में ग्राम पंचायतों द्वारा प्रजातांत्रिक विकेन्द्रीकरण किया गया है। ग्राम पंचायतें अपने अधिकांश लक्ष्यों को पूरा करने में सफल नहीं होपा रही हैं। ग्रामीण समाजशास्त्री

पंचायतों की कार्य–प्रणाली की आलोचनात्मक समीक्षा कर इन्हें और अधिक उपयोगी एवं प्रभावशाली बनाने में सहायता प्रदान कर सकते हैं।

इस प्रकार, ग्रामीण तथा कृषि प्रधान देश होने के कारण भारत के लिए ग्रामीण समाज का अध्ययन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

सन्दर्भ सूची

1. अग्रवाल , डॉ अमित , भारत में ग्रामीण समाज , 2003 पृ 1
2. वही , पृ 3
3. वही , पृ 4
4. वही , पृ 8
5. अग्रवाल, जी0के0, एवं पाण्डेय, डॉ0 शील स्वरूप, ग्रामीण समाजशास्त्र, 2004

❑